विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से संबद्ध

सरस्वती शिशु मन्दिर

सी-41, सेक्टर-12, नोएडा

ई- पत्रिका अंक- 43, मई-2024

ज्ञानोदय

सरस्वती शिशु मन्दिर

☎ 0120-4545608 WEBSITE: ssmnoida.in GMAIL: ssm.noida@gmail.com

विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से संबद्ध

सरस्वती शिशु मन्दिर ,सी - 41, सेक्टर – 12, नोएडा

मासिक ई- पत्रिका, मई – *2024*

ज्ञानोदय (अंक-43)

संरक्षक मंडल

श्री प्रताप मेहता

श्री दिनेश गोयल

श्री रविन्द्र कुमार

श्री प्रदीप भारद्वाज

श्री सुशील कुमार

श्री असित कुमार त्यागी

मार्गदर्शक

श्री प्रकाश वीर (प्रधानाचार्य)
सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा

संपादक

श्री लेखराज सिंह (आचार्य)
सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा

संपादक मंडल

श्री दीपक कुमार, ब॰अनु सिंह,
ब॰प्रतीक्षा दीक्षित

अनुक्रमणिका

- संपादकीय
- प्रधानाचार्य जी की कलम से
- ई-पत्रिका हेतु विचार व सुझाव
- भैया/बहिनों द्वारा स्वरचित कविताएँ
- लर्निंग आउटकम परीक्षा
- आचार्य अभिभावक गोष्ठी
- शिशु भारती गठन
- जयन्तियां
- विश्व पर्यावरण दिवस
- विश्व योग दिवस
- विद्यालय में आए अतिथि
- प्रान्तीय नवीन आचार्य प्रशिक्षण
- माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर पुण्यतिथि
- बिरसा मुण्डा पुण्यतिथि
- समर कैंप
- बताओ तो जानें
- पत्रिका अंक प्रश्नोत्तरी

संपादकीय

प्रत्येक महापुरुष के जीवन का कोई खास उद्देश्य होता है। वैसे तो प्रत्येक मनुष्य अपना कुछ उद्देश्य बतला सकता है पर उनके उद्देश्यों में कोई विशेषता नहीं होती। वह जो कुछ दृष्टि के सामने आ जाए या जो कार्य संयोगवश करना पड़े उसको उद्देश्य समझ लेते हैं , पर महापुरुषों का उद्देश्य समझ- बूझकर आंतरिक स्फूर्ति से निश्चित किया जाता है और वह बहुधा पारलौकिक एवं परोपकारपूर्ण होता है।

महापुरुषों के आदर्श, गुणों, शिक्षा, सिद्धांतों को जीवन में उतारने की प्रेरणा मिलती है। उनके जीवन से हमें जीवन जीने की कला प्राप्त होती है। प्रत्येक समस्या का समाधान मिलता है।

कैसे जीवन जीना है, उसका बोध होता है। महापुरूषों के जीवन के अनुभव ऐसे हैं कि उनके विचार जीवन की विपरित परिस्थितयों में भी वे हमें आगे बढ़ने के लिए सदैव प्रेरित करते हैं। इनकी स्तुति करने से जीवन को सम्यक ज्ञान, श्रद्धा, चिंतन, मनन शक्ति और सदाचरण करने का बल प्राप्त होता है तथा देश के राष्ट्र निर्माण में अहम योगदान रहा है और आज भी उनकी शिक्षाएं हमारे लिए उतनी ही महत्वपूर्ण व प्रेरक हैं।

ऐसे में समय-समय पर युवा पीढ़ी को देश के महापुरुषों के बारे में जानकारी देने के लिए हमारे शिशु मन्दिर संस्थान में विभिन्न महापुरुषों की जयन्तियों का आयोजन किया जाता है , जिससे भैया /बहिन उनके आदर्शों को अपने जीवन में आत्मसात कर सकें।

दीपक कुमार

अंक सम्पादक

प्रधानाचार्य जी की कलम से

.....हिंदू साम्राज्य उत्सव दिवस.....

ज्येष्ठ शुक्ल त्रयोदशी (20 जून 2024)

हमारा सौभाग्य है कि हमारी ऐतिहासिक परंपरा में प्रत्येक शताब्दी में किसी न किसी ऐसी महान आत्मा का आविर्भाव हुआ है, जिन्होंने आज जैसी ही नहीं अपितु इससे भी कहीं अधिक भीषण तथा निराशाजनक स्थिति में खड़े होकर उसमें आमूलचूल परिवर्तन कर दिया।

ऐसे ही महापुरुष हुए हैं छत्रपति शिवाजी महाराज, जिन्होंने 11 वर्ष की अवस्था में ही देश की स्थिति को देख अपने कुछ साथियों को लेकर प्रतिज्ञा की, कि "मैं अपने देश में धर्म का राज्य स्थापित करूंगा" । तथ्य यह है कि शिवाजी महाराज के जन्म के पूर्व और उनके समय भी आज की परिस्थिति से कहीं बढ़कर भयानक अवस्था थी।

समर्थ गुरु रामदास जी ने उसी समय के समाज की स्थिति का वर्णन करते हुए कहा है- कि हमारे समाज के लोगों ने अपने धर्म का स्वाभिमान छोड़ अपने देवताओं को भुला दिया है। और वह पराए लोगों का अनुकरण करने में स्वयं को धन्य मान रहा है। उन्होंने आर्तस्वर में कहा था, " हे भगवान भीषणता की अब परिसीमा हो गई है, सारे तीर्थ भ्रष्ट हो गए हैं। भजन पूजन करना असंभव हो गया है"।

ऐसे समय में बीजापुर दरबार में बादशाह को झुक कर अभिवादन न करना, मुगल सेनापति शाइस्ता खान व अफजल खान का वध करना, ग्रामीण मराठों को एकत्र कर उनका नेतृत्व करना, समयानुसार मान- अपमान से ऊपर होकर कार्य करना, नारी जाति का सम्मान तथा राष्ट्र सर्वोपरि के भाव को रखते हुए उन्होंने दूरदृष्टि को ध्यान में रखते हुए अनेक प्रेरणास्पद कार्य किये।

शिवाजी ने यह भी अनुभव किया कि आज सभी लोगों की श्रद्धा दिल्ली पर ही केंद्रित है देश में कोई भी हिंदू सिंहासन नहीं है। हिंदुओं का कोई भी श्रद्धा केंद्र नहीं है। ऐसे केंद्रों के अभाव में बड़े-बड़े विद्वान पुरुष भी "दिल्लीश्वरो वा जगदीश्वरो वा" का गुण-गान करते हैं। अतः जनता की

श्रद्धा को विधर्मी दिल्लीश्वर की ओर से हटकर उसे अपनी स्वयं की हिंदू सत्ता के रूप में एक स्वतंत्र सार्वभौम सिंहासन की ओर मोड़ने की आवश्यकता की पूर्ति हेतु उन्होंने छत्रपति के नाते सिंहासनासीन राजा बनने की कल्पना को मूर्त रूप दिया और ज्येष्ठ शुक्ल त्रयोदशी के दिन अपना राज्याभिषेक करा लिया।

शिवाजी का व्यक्तित्व असामान्य था। सामान्य से असामान्य होने के पीछे उनकी पदनिष्ठा नहीं थी बल्कि इसके पीछे मातृत्व प्रेम, धर्म रक्षा , जीवन की प्रेरणा बनी थी।

औरंगजेब जैसी आततायी शक्ति को धराशायी करना कोई मामूली बात नहीं थी। मातृ स्वाभिमान तथा हिंदू स्वाभिमान खड़ा करने में जीवन लगा दिया। स्वाभिमान के इस युद्ध में मुगलों का स्वाभिमान इतना गिरा दिया कि वह इतना डर गए कि अपनी बेगमों को भी जंगल पहुंचा दिया। क्योंकि वैचारिक मलीनता के कारण सोचा कि शिवाजी हमारी बेगमों को उठाकर न ले जाए। महाकवि भूषण कहते हैं कि वह वनों- जंगलों में भूखों मर रही हैं। तीन बार शाही भोजन करने वालीं वे अब केवल तीन "बेर" ही खाकर गुजारा करतीं हैं

("तीन बेर खाती थीं, सो तीन बेर खाती हैं)

इतनी सशक्त स्थिति में होने के बाद भी उन्हें लेशमात्र भी पदनिष्ठा/व्यक्तिगत निष्ठा नहीं थी। तभी तो उन्होंने शिवा साम्राज्य/ गुरु समर्थ रामदास साम्राज्य अथवा माता जीजाबाई साम्राज्य की स्थापना न कर "हिंदू पदपादशाही" (हिंदू साम्राज्य) की स्थापना की।

धन्य हैं ऐसे महापुरुष, जिनसे राष्ट्र हमेशा गौरवान्वित है।

प्रकाश वीर (प्रधानाचार्य)

ई-पत्रिका हेतु विचार व सुझाव

हर माह आने वाली ई- पत्रिका में विभिन्न प्रकार के क्रियाकलाप व जयन्ती मनाई जाती है। यह सभी चीजें बच्चों तथा उनके साथ अभिभावक को विद्यालय की तरफ आकर्षित करती हैं। इसमें अनेक प्रकार के महापुरुषों की जानकारी दी गई होती है। इसमें नई-नई ऐतिहासिक, सांस्कृतिक स्थलों व अनेक प्रकार की पहेलियों वाले सवाल होते हैं जिसके कारण बच्चों का मानसिक विकास होता है। यहां हर माह शारीरिक, बौद्धिक, सांस्कृतिक व सामाजिक प्रतियोगिताएं भी होती है जो हर विद्यालय में नहीं होती है। सभी ई-पत्रिका में अध्यापक/ अध्यापिका के साथ ही साथ प्रधानाचार्य जी के भी विचार होते हैं। मैं अपने अंतिम शब्दों में कहना चाहूंगी की हर रूप से या बहुत ही अच्छा साधन है जिससे विद्यालय में हो रही हर तरह की गतिविधियों से अभिभावकों को अवगत कराया जाता है।

वार्षिका पांडेय (अथर्व,5th -A)

After the corona epidemic the e magazine presented every month by the school is very useful for children as well as parents .This is possible only of hard work and dedication of the teachers and school management we can see each activity cultural programs through. the pictures published on the e magazine every child and parent want to see their children in e- magazines but sometimes this happens and also not After the corona epidemic the e magazine presented every month by the school is very useful for children as well as parents .This is possible only of hard work and dedication of the teachers and school management we can see each activity cultural programs through. the pictures published on the e magazine every child and parent want to see their children in e-After the corona epidemic the e magazine presented every month by the school is very useful for children as well as parents .This is possible only of hard work and dedication of the teachers and school management we can see each activity cultural programs through. the pictures published on the e magazine every child and parent want to see their children in e-magazines but sometimes this happens and also not e magazine give us various knowledge about and cultural religion and nation which every child should know and the question and answer section in the last page of the e magazine is very useful for children's personally I believe that children should be exposed to the informative message of a magazine at least 1 month is will develop physical and internal strength of children

सुमन कुमारी (अनामिका कुमारी, 5th-A)

स्कूल मैगज़ीन छात्रों की रचनात्मकता को बढ़ाने और उनकी प्रतिभा को प्रकट करने के रूप में एक गतिशील मंच के रूप में कार्य कर रही है, जिससे छात्रों के मध्य समूहभाव की भावना उत्पन्न हो रही है। छात्रों के इसमें योगदान से उनके अंदर लेखन, संपादन, और ग्राफिक डिज़ाइन जैसी महत्वपूर्ण कौशल कला का विकास होता हैं, साथ ही समूह में नेतृत्व कौशल को समृद्ध करता है।यह पत्रिका छात्रों को विभिन्न विषयों का अन्वेषण करने का एक मंच प्रदान कर रही है, जिससे निश्चय ही छात्रों की कृतिक सोच और विश्लेषण कौशल में सुधार होगा।

जीतेन्द्र कुमार गुप्ता (आस्था गुप्ता, 5th -B)

सर्वप्रथम आदरणीय प्रधानाचार्य जी एवं अध्यापकों को मेरा आभार जो उनके माध्यम से हमें अपने विचार रखने का अवसर प्राप्त हुआ। हम विद्यालय में संस्कृतिक तौर तरीकों के माध्यम से शिक्षा प्रदान कराने के इस प्रयास की सराहना करते है।

बालक में जो व्यक्तिगत सूझबूझ और अपने संस्कृति को निरंतर स्मरण रखने का अभ्यास हमारे आचार्यों के द्वारा किया जा रहा है वह अन्य संस्थानों से विशेष बनाता है। पत्रिका मे अपने बालक एवं उसके साथियों की गतिविधियाँ देखकर हर्ष होता है कि जिस प्रकार हमारे आचार्य जी बच्चों के साथ सदैव उनका मार्गदर्शन करते हुए उनको सब गतिविधियाँ कराते है।

विज्ञान प्रदर्शनी, बाल मेला, बाल यात्रा एवं समस्त जयंती का अद्भभुत आयोजन भी एक अच्छा प्रयास है। इस प्रकार की गतिविधियों का आयोजन अधिक हो ऐसी हमारी कामना है।

आचार्य - अभिभावक गोष्ठी के दौरान प्रत्येक बालक का आकलन आचार्य जी के माध्यम से दिया जाना भी ये दर्शाता है कि बालक पर निरन्तर नज़र ध्यान भी रखा जाता है।

ज्ञानोदय के समस्त संस्करणों मे पूछे गये प्रश्न बालक के साथ-साथ अभिभावकों के लिए भी महत्वपूर्ण होते है।

विद्यालय के समस्त कार्यक्रम अद्वितीय है मेरा सुक्षाव आपके समक्ष रखना सिर्फ सूर्य को दीपक दिखाने मात्र होगा। आप इसे विनती की तरह स्वीकार करें।

बालकों के लिए खेल प्रतियोगिताओ का भी आयोजन होना चाहिए।

समस्त आचार्यों के चरणो मे मेरा नमन।

सुनील कुमार (श्रेष्ठ, 5th -B)

सरस्वती शिशु मंदिर द्वारा संचालित ई- पत्रिका ज्ञानोदय का प्रकाशन विगत वर्षों से निरंतर हो रहा है। ई- पत्रिका के माध्यम से विद्यालय के बढ़ते कदमों का प्रमाण सचित्र मिलता है। ई पत्रिका के माध्यम से विद्यालय में आयोजित होने वाले छोटे छोटे क्रियाकलाप एवं साँस्कृतिक कार्यक्रमों का हर महीने पता चलता रहता है ।

ई- पत्रिका का प्रत्येक शीर्षक ज्ञानवर्धक होता है। प्रतिमाह प्रकाशित होने वाली पत्रिका शिशुओं के बौद्धिक ज्ञान वृद्धि में सहायक सिद्ध होती है।

सौरभ सिंह (चेतन सिंह, पंचम 'स')

वाह! यह सुनने में बहुत अच्छा लगता है कि विद्यालय ने एक इतना उत्कृष्ट पहल किया है। 'ज्ञानोदय' नामक ई-पत्रिका से न केवल बच्चों को, बल्कि उनके अभिभावकों को भी विद्यालय गतिविधियों के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।

संपादकीय अनुभाग से भी ज्ञानवर्धक विचार और जानकारी प्राप्त होती है। 'बताओ तो जाने' और 'समान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी' आर्थिक, सामाजिक, और सांस्कृतिक ज्ञान को बढ़ावा देते हैं, जिससे बच्चों का विकास होता है।

सोनिया व्यास (आराध्या व्यास, पंचम 'स')

पत्रिका के लिए मेरा अनुभव हम सबके लिए यह हर्ष का विषय है कि यह पत्रिका देश की एकता, को बनाए रखने की एक ऐसी कड़ी है जिसे मजबूत बनाना हर नागरिक का प्रथम कर्तव्य है। यह पत्रिका राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के क्रियाकलापों से संबंधित है इस पत्रिका में प्रकाशित सभी चीज जैसे बच्चों के अनुभव, कविताएं, कहानी ,आचार्य के द्वारा लिखी हुई अपना अनुभव ,बहुत ही प्रेरणादायक है । अतः इस पत्रिका के संपादन में कार्य करने वाले सभी आचार्य गण, प्यारे विद्यार्थियों एवं अभिभावकों को शत् शत् बधाई एवं शुभकामनाएं।

ममता मिश्रा (निर्भय मिश्रा कक्षा 5 द)

बालक की अन्तर्निहित शक्तियों को अभिव्यक्ति एवं विकास का अवसर प्रदान करना ही शिक्षा है. स्वामी विवेकानंद के इस कथन के अनुसार शिक्षा केवल औपचारिक रूप से कुछ विषयों के शिक्षण तक ही सीमित नहीं रह जाती उसका उद्देश्य विस्तृत एवं व्यापक है इसमें बालक के सर्वांगीण विकास (शारीरिक, मानसिक, बौध्दिक, नैतिक तथा आध्यात्मिक) एवं सामाजिक विकास की कल्पना में औपचारिक शिक्षा के साथ-साथ व्यक्तिगत क्षमताओं, प्रतिभाओं तथा सद्गुणों के विकास का वातावरण एवं अवसर प्रदान करना निहित है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा संचालित विद्या भारती के विद्यालयों को सरस्वती शिशु मंदिर एवं "सरस्वती विद्या मंदिर" कहते हैं. संघ परिवार सरस्वती शिशु मंदिर की शिक्षा प्रणाली को अभिनव रूप में मानते हुए इसका प्रसार करता है।

शिक्षा के इसी उद्देश्य को लेकर “सरस्वती शिशु मंदिर ” योजना का प्रारम्भ सन 1952 में हुआ था। आज विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान देश में प्रमुख पहचान एवं स्थान बनाये हुए है। ई-पत्रिका इस मिशन में जबरदस्त भूमिका निभा रहा है। आने वाले दिनों में ई-पत्रिका मील का पत्थर साबित होगा और देश के नव निर्माण में सबसे अहम भूमिका निभाएगा।

निभा रंजन (गतिक कक्षा 5 द)

हर महीने स्कूल से प्रस्तुत होने वाली ई -पत्रिका में बच्चों की प्रदर्शनी बहुत की जाती है। ई -पत्रिका में दिखाया जाता है कि छोटे-छोटे बच्चे क्या कर सकते हैं। ई-पत्रिका में हर कक्षा के बच्चों की गतिविधि दर्शायी जाती है। ई-पत्रिका में महापुरुषों के बारे में बताया जाता है। उनकी जयन्तियों के बारे में बताया जाता है। स्कूल में जो भी कार्यक्रम होते हैं उसके बारे में भी बताया जाता है। यह देख कर हमें बहुत अच्छा लगता है। हमें नई-नई चीज सीखने को मिलती है। पत्रिका के अंत में बताओ तो जाने और सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी भारतीय संस्कृति एवं परंपराओं तथा महापुरुषों के जीवन परिचय के प्रति बच्चों का रुझान बढ़ाने वाले हैं।

सुनीता झा (अरनव झा, 5th-E)

हर माह की तरह इस माह भी सरस्वती शिशु मंदिर नोएडा द्वारा अपनी मासिक ई-पत्रिका प्रदर्शित की जा रही है, जो बहुत ही ज्ञान-वर्धक, नई-नई जानकारी, सामाजिक, सांस्कृतिक,वैज्ञानिक तथा टेक्नोलॉजी का समावेश प्रस्तुत करती है, जो विद्यार्थियों के साथ-साथ हर उम्र के व्यक्तियों के लिए बहुत ही उपयोगी साबित होती है।

हमें प्रत्येक माह इस ई-पत्रिका का उत्सुकता से इन्तजार रहता है। एक अभिभावक होने के नाते इस पत्रिका के हर अंक को हम बड़े ही प्रफुल्लित मन से इसको पढ़ते हैं, जहाँ तक हमारा मानना है की हर वह व्यक्ति जिसको यह पत्रिका पढने को मिलती है वह जरुर वह इस आनन्दमयी पत्रिका जो जरुर पढता होगा।

यह सरस्वती शिशु मंदिर नोएडा द्वारा एक बहुत अच्छी पहल है तथा इस ई-पत्रिका मैं विद्यालय के यशश्वी ज्ञान के भंडार हमारे गुरुजनों का उद्बोधन हमारे बच्चों तथा हमारा भी विकास करने मैं सहायक साबित होती है।

मनोज कुमार सिंह (दिव्यांशी कक्षा, 5th-E)

सरस्वती शिशु मंदिर में हर माह प्रकाशित होने वाली ई-पत्रिका छात्रों के मनोगत भाव उनकी रचनात्मकता और उनके ज्ञान आदि को बढ़ाता है। इसमें हमारे अनुभवी शिक्षक द्वारा उनके ज्ञान का उद्बोधन होता है। ई-पत्रिका के अंतर्गत छात्रों द्वारा की गई महीने की सारी गतिविधियों की जानकारी मिलती है। ई-पत्रिका से छात्रों और अभिभावकों को भारत की संस्कृति हमारे देश के महान पुरुषों के विषय में जानने को मिलता है। इन शिक्षाओं से छात्र भारत की संस्कृति से जुड़े रहते हैं। और बच्चे उन महापुरूषों के आदर्शों को जानकर आत्मनिर्भर बन सकते हैं। वैसे तो पत्रिका में सारी जानकारियां होती है लेकिन मेरा सुझाव यह की पत्रिका में बच्चों द्वारा लिखी गई कविताएं कहानियां आदि उनकी रचनाओं को भी प्रकाशित किया जाना चाहिए।

गुंजा कुमारी (अराध्या 5th F)

इन पत्रिकाओं की निम्नलिखित प्रतिक्रियाओ से बच्चों के मन में जिज्ञासा उत्पन्न होती है जीवन में कुछ ऐसी बातें होती हैं जो आपको किताबों से भी समझ नहीं आता परंतु प्रतिक्रियाओं से बच्चे प्रभावित होते हैं और जल्दी समझते हैं। अच्छे संस्कार अच्छी शिक्षा और अच्छी संगति तीनों मिलकर जिंदगी को निखार देते हैं। मेरे सुझाव से प्रतिक्रियाएं होती रहनी चाहिए जिससे बच्चों को कुछ नया सीखने को मिले जो बच्चों के मनोबल को बढ़ाएं यदि ये प्रतिक्रियाओं के प्रश्न उत्तर अध्यापक विद्यालय में ही कराए तो और भी अच्छा रहेगा क्योंकि घर में बच्चों के माता-पिता ही ज्यादातर उत्तर स्वयं कर देते हैं।

संगीता (रशिक कसाना 5th-F)

भैया/बहिनों द्वारा स्वरचित कविताएँ

नर्सरी

मेरा देश महान

हम बच्चे हैं अभी नादान,

पढ़ लिखकर बनेंगे,देश की शान।

समझ हमारी यही महान

बने विश्व गुरु हमारा हिन्दुस्तान।

राष्ट्र हित में करें, हम काम

विश्व में हो देश का नाम।

सद्बुद्धि दें हमें,श्री कृष्ण/राम,

देश हित में रहे सदा हमारा नाम।

शौर्य कुकरेती (नर्सरी – अ)

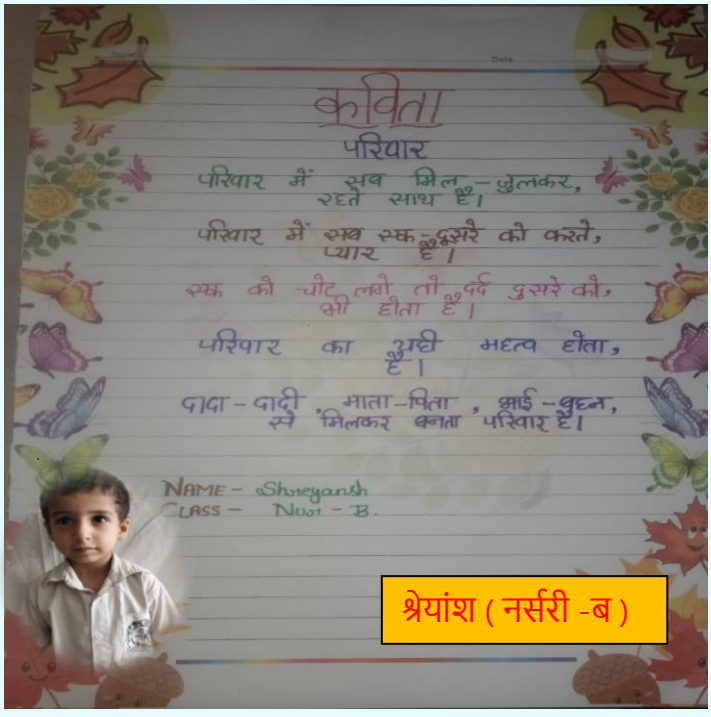

एल.के. जी.

मेरा स्कूल

जहाँ सबके लिए होते हैं कुछ रूल,

जहाँ जाकर मैंने सीखे कुछ उसूल,

उस जगह को कभी न जाना भूल,

वो है हम सबका प्यारा सा स्कूल।

अथर्व चौहान (एल.के. जी. – अ)

माँ

माँ की ममता मां का प्यार।
बाकी सब है झूठा संसार।।
गोद उठाती, लोरी गाती।
घर का सारा काम चलाती।।
सपना करती सब कुछ पूरा।
रहने देती कुछ ना अधूरा।।
माँ के आगे सब बेकार।
माँ की ममता मां का प्यार।।

नंदिनी (उदय- अ)

Poem On Teacher

Thank you teacher
You are so kind.
You gave me joy
And peace of mind.
You helped me dream
You gave me hope.
You thought me so
I would not mope.
You gave me strength
So I can see.
look really bright
Thanks for showing
Me the light

ANAV GUPTA L.K.G. B

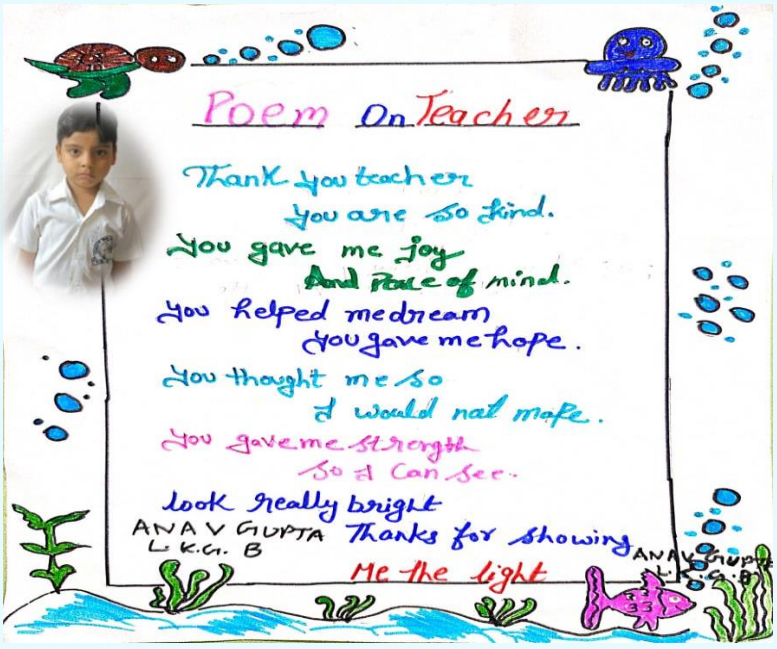

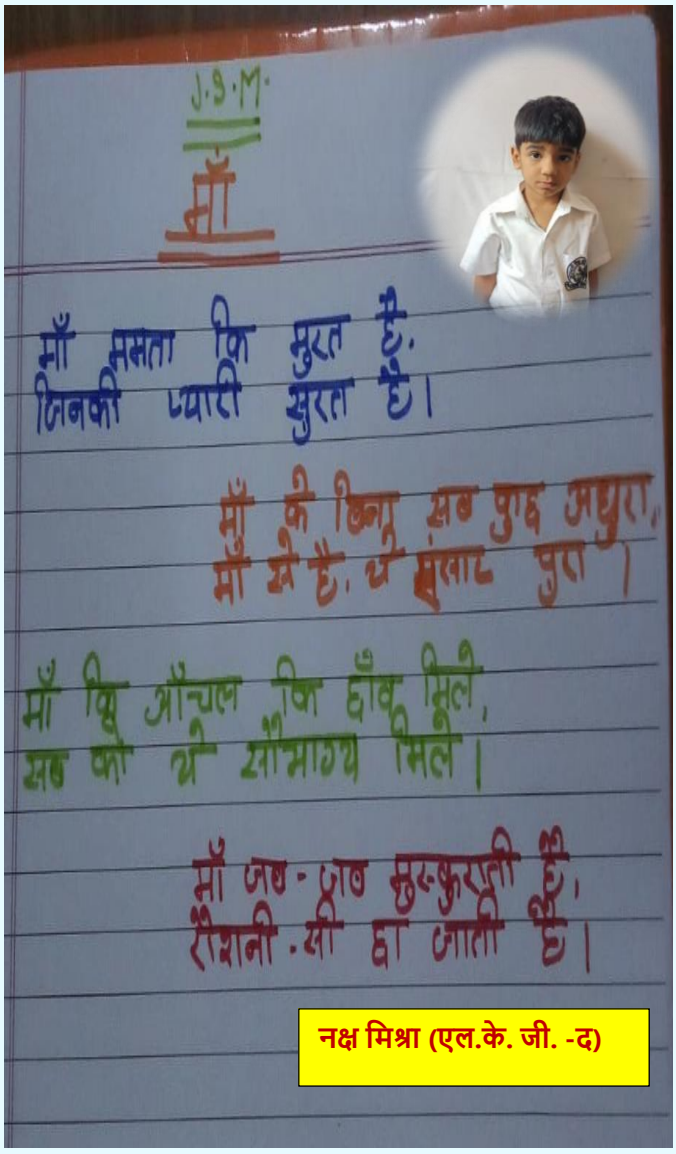

J.S.M.

माँ

माँ ममता कि मुरत है,
जिनकी प्यारी सुरत है।
माँ के बिना सब कुछ अधुरा,
माँ से है ये संसार पुरा।
माँ कि आँचल कि छाँव मिले,
सब को ये सौभाग्य मिले।
माँ जब-जब मुस्कुराती है,
रौशनी-सी छा जाती है।

नक्ष मिश्रा (एल.के. जी. -द)

सबको मान प्रतिष्ठा जिससे,
सीखी कर्तव्यनिष्ठा जिससे।
मेरे मन को भाता,
मेरा वह शिक्षक कहलाता।

तक्ष बिलचोरिया **(एल.के. जी. -द)**

यू.के.जी.

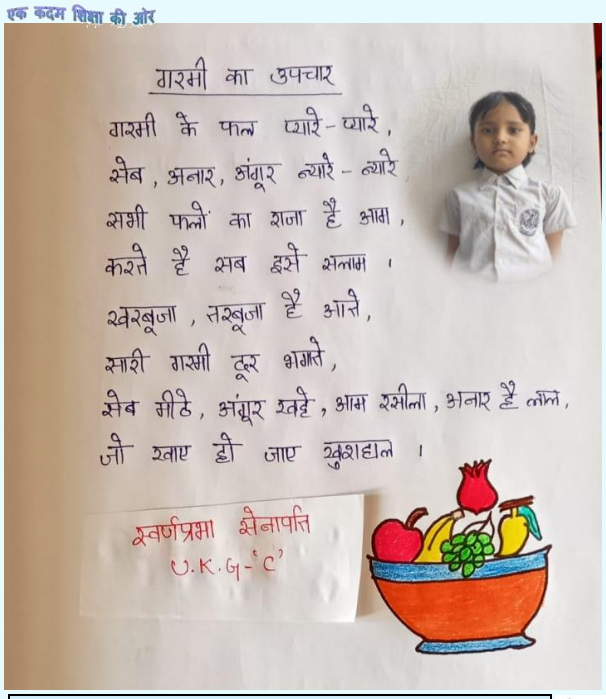

गरमी का उपचार

गरमी के फल प्यारे-प्यारे,
सेब, अनार, अंगूर न्यारे-न्यारे
सभी फलों का राजा है आम,
करते हैं सब इसे सलाम।
खरबूजा, तरबूजा है आते,
सारी गरमी दूर भगाते,
सेब मीठे, अंगूर खट्टे, आम रसीला, अनार है लाल,
जो खाए हो जाए खुशहाल।

स्वर्णप्रभा सेनापति
U.K.G-'C'

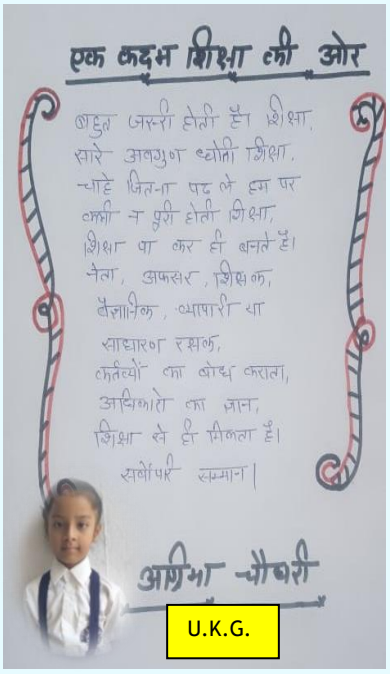

एक कदम शिक्षा की ओर

बहुत जरूरी होती है शिक्षा,
सारे अवगुण धोती शिक्षा,
चाहे जितना पढ़ ले हम पर
कभी न पूरी होती शिक्षा,
शिक्षा पा कर ही बनते हैं।
नेता, अफसर, शिक्षक,
वैज्ञानिक, व्यापारी या
साधारण रक्षक,
कर्तव्यों का बोध कराता,
अधिकारो का ज्ञान,
शिक्षा से ही मिलता है।
सर्वोपरि सम्मान।

अणिमा चौधरी
U.K.G.

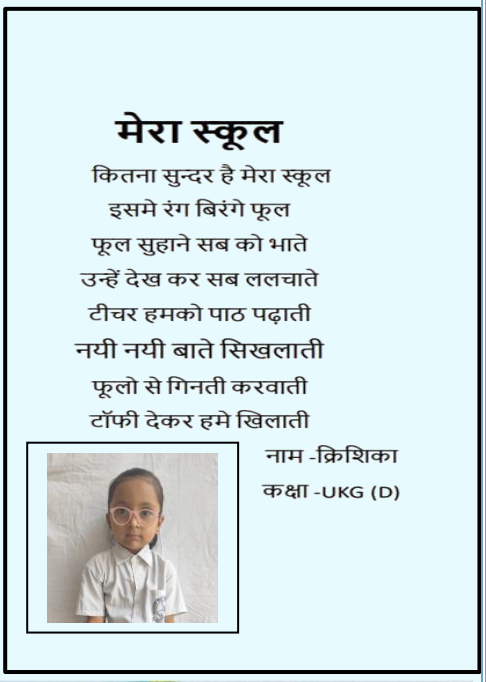

मेरा स्कूल

कितना सुन्दर है मेरा स्कूल
इसमे रंग बिरंगे फूल
फूल सुहाने सब को भाते
उन्हें देख कर सब ललचाते
टीचर हमको पाठ पढ़ाती
नयी नयी बाते सिखलाती
फूलो से गिनती करवाती
टॉफी देकर हमे खिलाती

नाम -क्रिशिका
कक्षा -UKG (D)

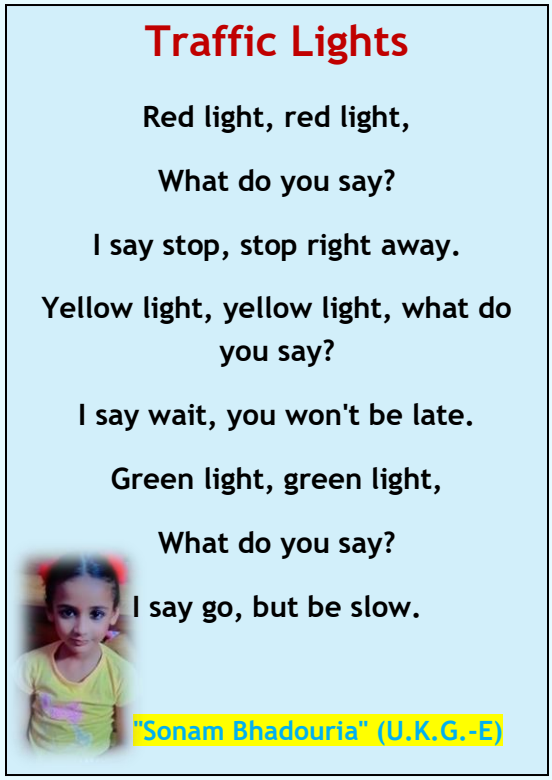

Traffic Lights

Red light, red light,

What do you say?

I say stop, stop right away.

Yellow light, yellow light, what do you say?

I say wait, you won't be late.

Green light, green light,

What do you say?

I say go, but be slow.

"Sonam Bhadouria" (U.K.G.-E)

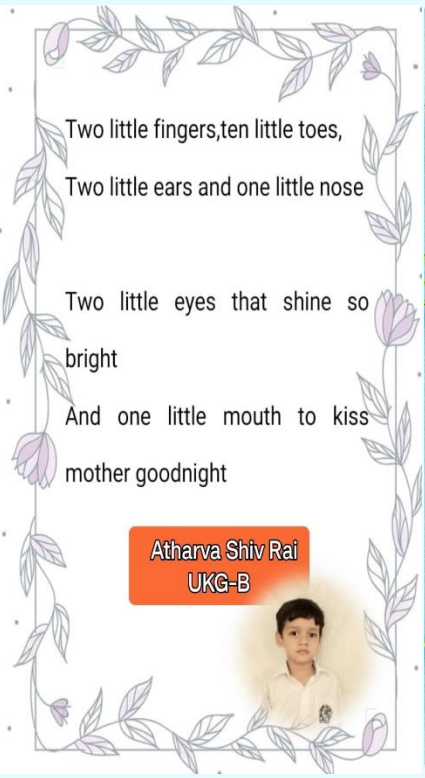

Two little fingers,ten little toes,
Two little ears and one little nose

Two little eyes that shine so bright
And one little mouth to kiss mother goodnight

Atharva Shiv Rai
UKG-B

स्कूल तो है ज्ञान का मंदिर,
शिक्षा का वरदान है।
सभी बच्चे हैं स्कूल जाते,
मिलता अच्छा ज्ञान है।

सबसे प्यारा मेरा स्कूल,
मन को बहुत भाता है।
जग से प्यारा मेरा स्कूल,
मुझको बहुत लुभाता है।

Lakshaya Singh Bisht
UKG-B

लर्निंग आउटकम परीक्षा

बालकों ने गत कक्षा के आधार पर विषयशः कितना ज्ञान अर्जित किया इस विषय को जानने के लिए दिनांक- 02 व 03 मई 2024 को लर्निंग आउटकम की परीक्षा का आयोजन किया गया।

आचार्य अभिभावक गोष्ठी

दिनांक-04 मई 2024 को विद्यालय में आचार्य-अभिभावक गोष्ठी (P.T.M.) का कार्यक्रम हुआ, जिसमे बालकों के सम्पूर्ण विकास के लिए विचारों का आदान- प्रदान किया गया।

शिशु भारती गठन

भैया/बहिनों के सर्वांगीण विकास हेतु दिनांक 06 मई 2024 को शिशु भारती का गठन किया गया जिसमे कमांडर विनोद गुप्ता जी ने भैया/बहिनों को शपथ दिलाई।

रविन्द्र नाथ टैगोर जयन्ती

विद्यालय में दिनांक - 07.05.24 को रविन्द्रनाथ टैगोर जी की जयन्ती मनाई गई, जिसमें भैया/बहिनों के समक्ष उनके सुविचारों को व्यक्त किया गया।

"जब हम विनम्रता से महान होते हैं, तभी हम महानता के सबसे करीब होते हैं।"

महाराणा प्रताप जयन्ती

विद्यालय में दिनांक - 09.05.24 को महाराणा प्रताप जी की जयन्ती मनाई गई, जिसमें विद्यालय के आचार्य हरिओम जी ने भैया/बहिनों को अपने कर्म के मार्ग पर अडिग और प्रशस्त रहने की बात बताई।

" जो विपत्ति में हार नहीं स्वीकारते, वही निज साहस से इतिहास को लिखते हैं।"

परशुराम जयन्ती

दिनांक - 10.05.24 को परशुराम जी की जयन्ती मनाई गई, जिसमें विद्यालय की आचार्या दीदी नेहा जी ने भैया/बहिनों को उनके आदर्शों से अवगत कराया।

"परशुराम जी धर्म, न्याय व नीति की प्रतिमूर्ति हैं। "

विश्व पर्यावरण दिवस

पृथ्वी ,जल, अग्नि ,आकाश और वायु जीवन के ये पांच तत्व है। जो प्रकृति में पर्याप्त मात्रा में विद्यमान है। किंतु प्रकृति से छेडछाड करने के कारण इन तत्वों की मात्रा गुणवत्ता तथा स्वरूप में निरन्तर ह्रास हो रहा है। पर्यावरण प्रदूषण व असंतुलन इसका परिणाम है। पर्यावरण का अर्थ है जो हमसे अलग होते हुए भी हमें चारो ओर से घेरे हुए है। पर्यावरण दो शब्दो को जोड़कर बना है - परि + आवरण। परि का अर्थ है - चारो ओर तथा आवरण का अर्थ है घेरे हुए । मानव के सभी क्रियाकलाप पर्यावरण से सम्बन्धित है। पर्यावरण में परमाणु शक्ति उत्पन्न केन्द्रों और परीक्षण के परिणामस्वरुप, जल ,वायु व पृथ्वी का प्रदूषण निरंतर बढ़ता जा रहा है। इस कारण मानव ही नहीं वरन् संपूर्ण जगत को खतरा उत्पन्न हो गया है।इस संकट से निजात पाने के लिए अधिक से अधिक पेड़ लगाने की आवश्यकता है। भारतीय संस्कृति में प्रकृति को परमेश्वर की शक्ति का दर्जा दिया गया है। एक भी वनस्पति ऐसी नहीं है जिसका औषधीय प्रयोग न हो जो आसानी से उपलब्ध है तथा अत्यन्त उपयोगी है ।उन पौधो को देवताओं से सम्बन्धित कर दिया है। जैसे दुर्वा, तुलसी पीपल, बेल, बरगद वट वृक्ष आदि। दुर्वा को गणेश जी से ,तुलसी को विष्णु जी से ,बेल को भगवान शिव से ,बरगद को त्रिदेव (बह्मा विष्णु महेश) से सम्बन्धित माना गया है। सम्पूर्ण प्रकृति से हमारा जीवन जुड़ा है। अतः पर्यावरण को बचाना हमारी नैतिक जिम्मेदारी हैं। पर्यावरण का संकट आज विश्व भर में गहराता जा रहा है। पर्यावरण को सरंक्षित करने के लिए संयुक्त राष्ट्र ने 1972 में विश्व पर्यावरण दिवस की स्थापना की। हर वर्ष 5 जून को विश्वभर में पर्यावरण दिवस मनाया जाता है। जीवनदायिनी धरती को रहने योग्य बनाने के लिए तथा पेड़ पौधो के जीवन को बचाने के लिए पर्यावरण प्रदूषण के कारको को कम किया जा सकता है।

“पेड लगाए, पेड बचाएं
इसमें ही है हम सबकी समझदारी।
मानव जीवन है खतरे में
पर्यावरण सुरक्षा की ले जिम्मेदारी।।”

आचार्या - अंजलि शर्मा

विश्व योग दिवस

योग एक प्राचीन , शारीरिक , मानसिक ,और आध्यात्मिक अभ्यास है। जिसकी उत्पत्ति भारत में हुई थी योग शब्द संस्कृत से लिया गया है। और इसका अर्थ है जुड़ना जो शरीर और चेतना के मिलन का प्रतीक है। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का विचार पहली बार भारत के वर्तमान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 27 सितंबर 2014 को संयुक्त राष्ट्र महासभा में अपने भाषण के दौरान प्रस्तावित किया था ।उन्होंने कहा था कि योग भारत की प्राचीन परंपरा की अमूल्य देन है ।यह मन और शरीर की एकता का प्रतीक है ,अपनी जीवन शैली को बदलकर और चेतना पैदा करके यह भलाई में मदद कर सकता है।

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस को अपनाने की दिशा में काम करना चाहिए 21 जून 2015 को दुनिया भर में पहला अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया हर साल आयुष मंत्रालय भारत में आवश्यक व्यवस्था भी करता है प्रधानमंत्री मोदी और 84 देश के गणमान्य व्यक्तियों सहित 35,985 लोगों ने नई दिल्ली में राजपथ पर 35 मिनट के लिए 21 योग आसन किए ,जो अब तक का सबसे बड़ा योग वर्ग बन गया ।

योग दिवस 21 जून का दिन इसलिए तय किया गया, क्योंकि पंचांग के मुताबिक 21 जून उत्तरी गोलार्द्ध का सबसे लंबा दिन होता है इसे ग्रीष्म संक्रांति कहते हैं। जिसके बाद सूर्य दक्षिणायन होता है। जिससे सूर्य का तेज कम हो जाता है वातावरण अशुद्ध हो जाता है ।कीटाणु उत्पन्न होने लगते हैं और रोग प्रतिरोधक क्षमता कम हो जाती है इसलिए तन मन को स्वस्थ रखने के लिए 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के लिए चुना गया है ।

योग दिवस का उद्देश्य दुनिया भर के लोगों को स्वस्थ जीवन शैली के लिए प्रोत्साहित करना और योग व ध्यान के प्रति जागरूक करना। विश्व योग दिवस अभ्यास करने के लाभों के बारे में जागरूकता बढ़ाने और लोगों को अपने दैनिक जीवन के एक भाग के रूप में इसे अपनाने के लिए प्रोत्साहित करना है ।

प्रत्येक योग गतिविधि ,लचीलापन ,ताकत, शारीरिक ,मानसिक, भावनात्मक, संतुलन में सुधार की कुंजी है ।

यह एक ऐसा अभ्यास है जो हमें आधुनिक जीवन चुनौतियों को सफलतापूर्वक पूरा करने के लिए तैयार करता है ।योग मानव जीवन में अहम योगदान रखता है ।योग करके न सिर्फ शरीर को स्वस्थ रखा जा सकता है बल्कि खुद को शांत भी रखा जा सकता है ।योग ध्यान , आत्मजागरूकता और करुणा को प्रोत्साहित करता है ,सकारात्मक दृष्टिकोण को बढ़ावा देता है ,और दूसरों के साथ हमारे संबंधों को पोषण देता है ।योग से बच्चों में उनकी एकाग्रता की क्षमता में सुधार होता है ।

संयुक्त राष्ट्र ने स्वीकार किया कि योग दुखों को कम करने में मानवता प्रदान करता है और लोगों को एक साथ लाता है ।अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस में विश्व स्तर पर विशाल लोकप्रियता प्राप्त की है और लाखों लोग इस दिन योग संबंधित कार्यक्रमों में भाग लेते हैं।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 2024 का विषय "मानवता " है । इसका उद्देश्य योग की समय प्रकृति के बारे में जागरूकता पैदा करना और बेहतर कल्याण के लिए लोगों को इसे अपने दैनिक जीवन में शामिल करने के लिए प्रोत्साहित करना है ।

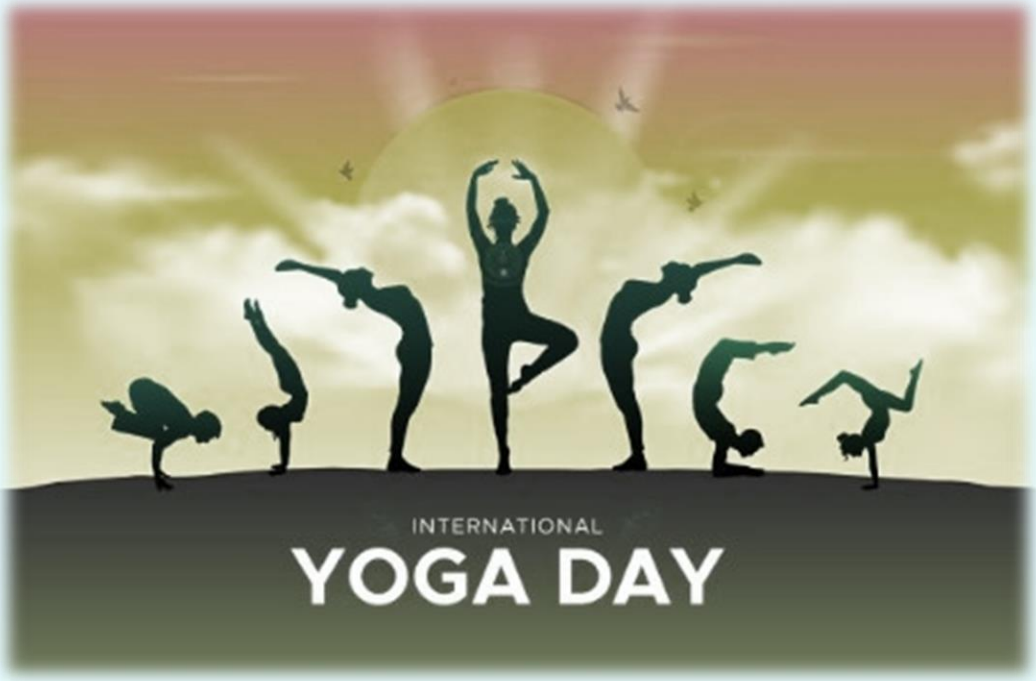

सुनीता (आचार्या)

विद्यालय में आए अतिथि

दिनांक - 18.05.24 को विद्यालय में सरकारी प्राथमिक विद्यालयों से कार्ययोजना बैठक हेतु गौतम बुद्ध नगर के विद्यालयों से आए प्रधानाध्यापक तथा खण्ड शिक्षा अधिकारी महोदय श्री चंद्रभूषण जी।

प्रांतीय नवीन आचार्य प्रशिक्षण

सरस्वती शिशु मन्दिर (नोएडा)

सहयोग - भारत विकास परिषद, नोएडा

विद्या भारती
अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से सम्बद्ध
सरस्वती शिशु मन्दिर

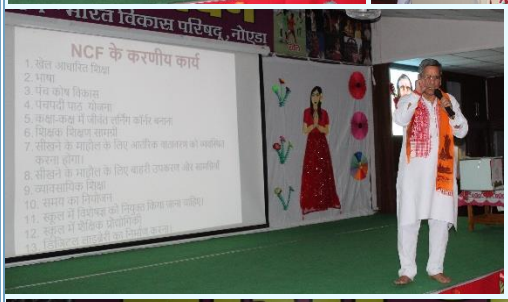
NCF के करणीय कार्य

सहयोग - भारत विकास परिषद, नोएडा

विद्या भारती
अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से सम्बद्ध
सरस्वती शिशु मन्दिर

सहयोग - भारत विकास

विद्या भारती
अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से सम्बद्ध
सरस्वती शिशु मन्दिर
सी-41, सैक्टर-12
नोएडा, गौतमबुद्ध नगर

सहयोग - भारत विकास

विद्या भारती
सरस्वती शिशु मन्दिर

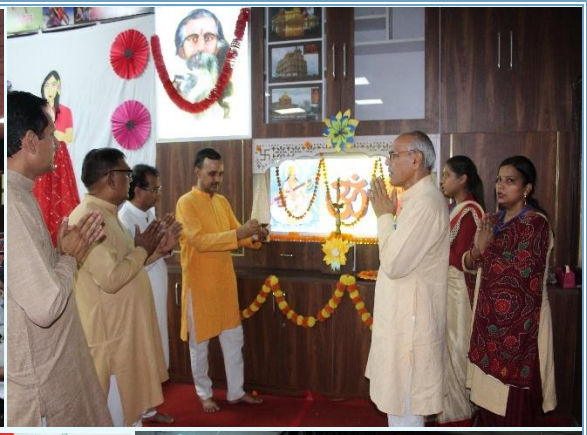

विद्या भारती
सरस्वती शिशु मन्दिर

सहयोग - भारत विकास परिषद, नोएडा

विद्या भारती
सरस्वती शिशु मन्दिर
सहयोग - भारत विकास परिषद, नोएडा

सहयोग - भारत विका
प्रेरणा

विद्या भारती
सरस्वती शिशु मन्दिर

विद्यालय में दिनांक- 21 मई से 28 मई 2024 तक होने वाले प्रांतीय नवीन आचार्य प्रशिक्षण वर्ग के छायाचित्र I

प.पू. श्री गुरु जी माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर

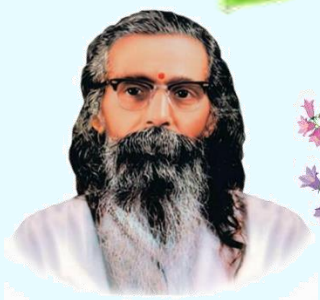

प.पू. श्री गुरु जी एक प्रेरक व्यक्तित्व

जीवन पुष्प चढ़ा चरणों में
मांगे मातृभूमि से यह वर
तेरा वैभव अमर रहे मां
हम दिन चार रहें ना रहें।

उपरोक्त पंक्तियों को चरितार्थ करने वाले भारत मां के सच्चे सपूत प्रखर राष्ट्रवादी, हिंदुत्व के पुरोधा, एवं महान आध्यात्मिक विभूति प.पू. श्री गुरुजी उपारन्य श्री माधवराव सदाशिव राव गोलवलकर का जन्म महाराष्ट्र प्रांत में रामटेक नामक स्थान पर दिनांक- 19 फरवरी 1906 को हुआ था। उनके बचपन का नाम मधु था। 9 भाई बहिनों में एकमात्र जीवित संतान के रूप में बालक मधु का लालन-पालन बड़े लाड प्यार से हुआ था। इनके पिता का नाम श्री सदाशिव राव गोलवलकर तथा माता का नाम श्रीमती लक्ष्मीबाई था। उनके पिता प्रारंभ में डाक तार विभाग में नौकरी करते थे लेकिन बाद में सन् 1908 में वे सरकारी स्कूल में अध्यापक हो गए।

बालक मधु की प्रारंभिक शिक्षा महाराष्ट्र में हुई । उच्च शिक्षा के लिए वे बनारस हिंदू विश्वविद्यालय चले गए और वहीं से उन्होंने सन् 1926 में बी.एस.सी. और सन् 1928 में प्राणिशास्त्र विषय में एम.एस.सी. किया। 16 अगस्त 1931 में वे बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में प्राणिशास्त्र के अध्यापक बने।

माधवराव सदाशिव राव गोलवलकर अपने छात्रों में बहुत लोकप्रिय थे। उनके विद्यार्थी उन्हें गुरुजी कहकर ही संबोधित करते थे। उनकी आय का अधिकांश भाग गरीब और मेधावी छात्रों की फीस और पुस्तकें खरीदने में चला जाता था।

श्री गुरु जी को खेलों में बहुत रुचि थी। उनके प्रिय खेल थे टेनिस, हॉकी और मलखंभ। संगीत में बांसुरी और सितार उनके प्रिय वाद्य यंत्र थे।

श्री गुरु जी प्राणी शास्त्र के अतिरिक्त गणित, दर्शनशास्त्र अंग्रेजी और विज्ञान विषयों में उनकी विशेष रूचि और पकड़ थी।

काशी में ही श्री गुरु जी संघ के प्रचारक श्री भैया जी दाढ़ी के संपर्क में आए और वहां संघ शाखा में जाने लगे 1931 में वे संघ संस्थापक डॉ हेडगेवार जी ने उन्हें समझाया कि आपका जन्म इस बिखरे हुए हिंदू समाज को जोड़ने और उनके उद्धार के लिए हुआ है। उनके समझाने पर माधवराव पूरी तरह से संघ कार्य करने के लिए समर्पित हो गए 1939 में एक गुरु दक्षिणा कार्यक्रम में डॉ हेडगेवार जी ने श्री गुरु जी के संघ का सरकार्यवाह बनाने की घोषणा की

कार्य के प्रति लगन समझ और कुशल नेतृत्व क्षमता के कारण वे सबके प्रिय बन गए 1940 में डॉ हेडगेवार जी के अवसान के पश्चात 34 वर्ष की आयु में सरसंघ चालक बने।

सरसंघ चालक बनने के बाद श्री गुरु जी ने सारे देश का सघन प्रवास किया और धीरे-धीरे संघ का अखिल भारतीय स्वरूप खड़ा किया।

33 वर्षों तक संगे के कार्य विस्तार के साथ-साथ विभिन्न संगठनों के निर्माण में भी गुरु जी की महत्वपूर्ण भूमिका रही। कार्यकर्ता निर्माण एवं विस्तार के लिए उन्होंने अपने आप को पूरी तरह समर्पित कर दिया वह कहा करते थे की रेलगाड़ी ही हमारा घर है हिंदू विचारधारा का प्रकार तथा वृद्धि कार्य करता निर्माण के लिए सारे देश में शाखों का जाल बिछाया उन्होंने अपने जीवन काल में लगभग 50 संगठनों का निर्माण किया उनमें प्रमुख रूप से विश्व हिंदू परिषद वनवासी कल्याण आश्रम अo भीo विद्यार्थी परिषद विद्या भारती भाo मजदूर संघ आदि प्रमुख है उनके कार्यकाल में संघ का विस्तार देश के अतिरिक्त विदेश में भी हुआ।

अनथक अविरल कार्य साधना कण कण छन छन राष्ट्र को अर्पण करने का भाव राष्ट्रवाद का जागरण देश को फिर से परम वैभव पर पहुंचने की लालसा तथा कार्यकर्ताओं को इस दिशा में जाने हेतु श्रेष्ठ मार्गदर्शन में उन्हें विशिष्ट बना दिया देश के लिए उन्होंने अपने जीवन को खपा दिया।

जम्मू कश्मीर का भारत में विलय करने में श्री गुरु जी की महत्वपूर्ण भूमिका रही 1962 में भारत चीन युद्ध के समय नागरिक प्रशासन में संघ ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई तथा तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री ने भी गुरु जी से उसे समय की परिस्थितियों में गुरु जी से सहयोग मांगा था उन्होंने हिंदू राष्ट्र की अवधारणा को पुष्ट करने के लिए अनेक पुस्तक लिखी तथा उनके विचारों का संग्रह श्री गुरु जी समग्र दर्शन नमक अनेक ग में प्रकाशित हुए विचार नवनीत नामक पुस्तक बहुत प्रसिद्ध हुई।

वह संघ की राजनीति से दूरी के पक्षधर थे उन्होंने हमेशा समाज की एकरूपता पर जोर दिया वे कहते थे कि जो इस देश को अपनी मातृभूमि पितृ भूमि मानता है वह हिंदू है चाहे उनकी पूजा पद्धति कुछ भी हो देश प्रेम ही बुनियादी शर्त है वह बहू यामी व्यक्तित्व के धनी थे उनका जीवन हम सबके लिए हमेशा प्रेरणा का स्त्रोत रहेगा 5 जून 1973 को उन्होंने अपनी जीवन लीला पूरी की हम 5 जून को उनकी पुण्यतिथि पर उन्हें अश्रुपूरित नेत्रों से विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

नेत्रपाल सिंह (पूर्व प्रदेश निरीक्षक)

बिरसा मुण्डा

देश, धर्म और समाज पर जब -जब संकट आया तब -तब रत्न गर्भा मां बसुन्धरा की गोद से नररत्नों का प्रादुर्भाव हुआ है।समस्त खनिजों से परिपूर्ण झारखंड प्रदेश प्रकृति की गोद में विराजमान उन्निहातु नामक गांव में सुगना मुंडा (पिता एवं कर्मी मुंडा-माता) की तीसरी संतान के रूप में 1875 ई०में नवंबर मास की 15 दिनांक को एक दिव्य बालक का जन्म हुआ। बृहस्पतिवार को जन्म होने के कारण बिरसा नाम रखा गया। विरसा की प्रारंभिक शिक्षा बुडजु नामक गांव में जयपाल नाग के विद्यालय में हुई। बालक की प्रतिभा को देखकर जयपाल नाग ने बिरसा के माता-पिता से बिरसा को किसी अच्छे विद्यालय में पढ़ाने को कहा। 1886 ईस्वी में 11 वर्षीय बिरसा को चाईबासा स्थित जर्मन ईसाई मिशन के विद्यालय में प्रवेश दिला दिया।

एक बार विद्यालय की प्रार्थना सभा में जर्मन लुटेरियन मिशन के अध्यक्ष फादर नोटोर्ट वर्य ने अपने भाषण में वनवासी बन्धुओं के लिए धूर्त, वंचक और चोर कहा। अपने बांधबों के प्रति इस तरह के अपशब्दों को सुनकर 14 वर्षीय बिरसा सिंह शावक की तरह गर्जना करते हुए बोला-आपने धूर्त, वंचक और चोर किसे कहा? क्या बनवासी आपको आज भी वंचित लगते हैं। यह तो ऐसे सरल हृदय और प्रमाणिक(ईमानदार) हैं कि संसार में अन्यत्र ऐसे लोग ढूंढने पर भी नहीं मिलेंगे। बनवासी लोग मन, वचन और कर्म से उत्तम होते हैं। आप ही धूर्त, लुटेरे और चोर हैं। इस घटना के परिणाम स्वरूप बिरसा को विद्यालय से निकाल दिया गया।

अंत में (इसके बाद) वैष्णव भक्त श्री आनन्द पांडे के सानिध्य में बिरसा ने धार्मिक शिक्षा ग्रहण की। मैं कौन हूं? यह संसार क्या है? इस संसार में आने का मेरा प्रयोजन क्या है? खाना -पीना, वंशवृद्धि क्या यही धर्म है? इत्यादि प्रश्नों का समाधान खोजने लगे। 14 वर्ष तक बिरसा ने कठोर साधना की और अपने लोगों को उपदेश दिया कि यह ईसाई धर्म विदेश से आया है यह हमारा धर्म नहीं है, यह हमें हमारे पूर्वजों से, हमारी संस्कृति से विमुख करता है। यदि आप सुखी जीवन जीना चाहते हैं तो अपनी संस्कृति पर आधारित जीवन जिएं। रामायण, महाभारत और गीता का नित्य पाठ करें।

एक बार भयंकर वर्षा काल में मित्रों के साथ जंगल में जाते हुए बिरसा के ऊपर वज्रपात हो गया परंतु आश्चर्य कि उनका शरीर जला नहीं बल्कि और अधिक दैदीप्यमान हो गया। वे स्वयं कहते थे कि यही ईश्वर है।

विदेशियों के अत्याचारों से दुखी भारत भूमि को मुक्त कराऊंगा और फिर से भारत माता सर्वोच्च सिंहासन पर विराजमान होगी। मैं आपको कहता हूं- संगठित रहें और साथ चलें। इस तरह बिरसा के उपदेशों से प्रभावित होकर बहुत से लोग उनके शिष्य बन गए। पूर्व में जिन्होंने ईसाई धर्म /मत अपना लिया था वे पुनः अपने धर्म में वापस आ गए।

20 वर्षीय बिरसा महोदय के बढ़ते प्रभाव से भयभीत होकर अंग्रेज शासकों ने धोखे से रात्रि में उन्हें बंदी बना लिया। 1895 ई० नवंबर मास की 19 दिनांक को शासन के विरुद्ध आचरण के कारण 2 वर्ष सश्रम कारावास की घोषणा करते हुए हजारीबाग स्थित कारागृह में निरुद्ध कर दिया।

1897 ईस्वी में नवंबर मास की 30 दिनांक को कारागार से मुक्त होकर चालकंद नामक स्थान पर आए और अपने बनवासी बान्धवों को संगठित कर अंग्रेजी शासन की समाप्ति के निमित्त क्रांति का सूत्रपात किया तथा घर-घर में शस्त्र अस्त्र इकट्ठा करना प्रारंभ कर दिया। 1899 ईस्वी में दिसंबर मास की 24 दिनांक को अंग्रेजी शासन के विरोध स्वरूप पहला आक्रमण किया। बनवासियों ने बहुत से भंडार गृह, कार्यालय, तथा अंग्रेज अधिकारियों के आवास जला दिए। इस घटना से कुपित होकर अंग्रेज शासकों ने गोली का प्रहार करके अनेक बनवासी बान्धवों को मार दिया। कई माह के प्रयासों के बाद बिरसा महोदय को लोहे की जंजीरों में बांधकर रांची की जेल में डाल दिया। वहीं कारागार में 1900 ईस्वी में जून मास की 9 दिनांक को बिरसा महोदय इस संसार से विदा हो गए। ऐसा भी सुना जाता है कि जेल अधीक्षक ने बिरसा को विषाक्त भोजन देकर मार दिया।

धन्य हैं वे लोग जो मातृभूमि के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर गए।

जयतु भारत मातरम्।

रामधुन पाल धनगर

(पूर्व प्रधानाचार्य विद्या भारती)

Zoom
End

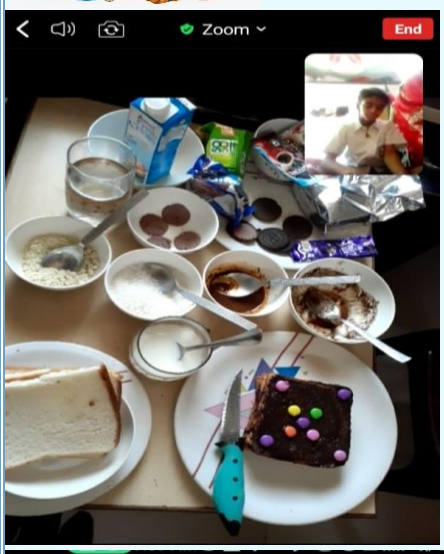

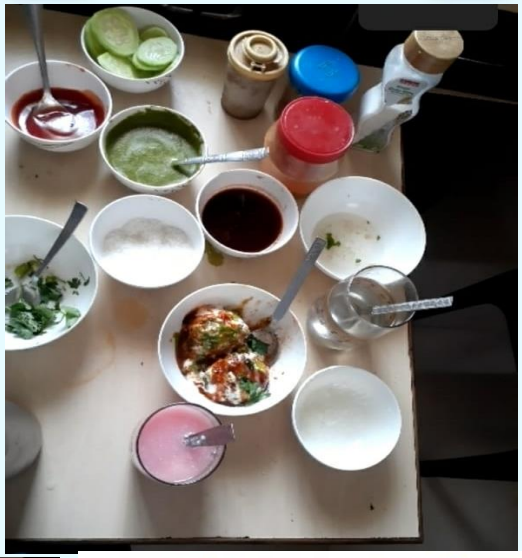

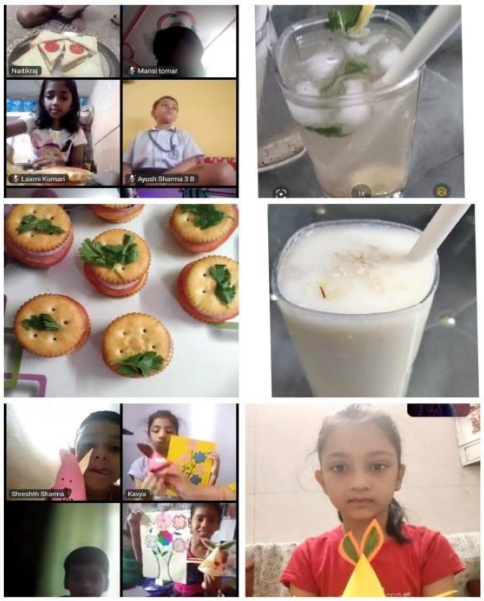

Daksh is
siddhi Vashisht
Krishna Yadav Roll number 4
Krishan sharma
Ayush Yadav
Divyanshika
Namish Kumar Sharma 5D
SUNIDHI KUMARI 5TH D

HARSHITA 5 TH F
Riddhima mandal
Amod Jadaun
Rashik kasana
Vedika chauhan
Ravi kant
Aarohi 5f
Atulya pratap 5f

Aparna Mishra class UKG A
Nitesh
Tashvi
Sara Bhardwaj
Join
Shanvi Sharma
Neha parveen
Mayank
Suraj Raghav

Chandranshu Mohan
Atharv dwivedi
Tanmay
Chahat
Chandranshu Mohan
Anika gupta
Janavi Sharma
Shruti Singh 2nd C
Kushagra Rai 2nd C
Shruti Singh 2nd C
Nikesh Kumar Ojha
Harshika
Pankaj Rana
Kushagra Rai 2nd C
Abhiraj
Abhiraj
Janavi Sharma

समर कैंप में कराए गए क्रियाकलाप :-

Fun with colour	Yoga
Brain Game	Personality Grooming
Art and Craft	No flame activity
Digital Art	Feedback and Conversation

समर कैंप में कराए गए क्रियाकलाप में भागीदारी करते हुए भैया/बहिनों के छायाचित्र।

बताओ तो जाने

भारत के मानचित्र में निर्देशित किए गए बिन्दुओं के राज्य व राजधानी बताएँ।

उत्तर इसी अंक में है।

पत्रिका अंक प्रश्नोत्तरी

1.महापुरुषों के किन गुणों को जीवन में उतारने की प्रेरणा मिलती है ?

2.हिन्दू साम्राज्य दिवस कब मनाया जाता है ?

3.हिन्दू साम्राज्य उत्सव दिवस किस महापुरुष से सम्बन्धित है ?

4."पानी है कितना अनमोल" कविता किस कक्षा की बहिन ने लिखा है ?

5.बहिन सोनम भदौरिया की कविता का विषय क्या है ?

6.विद्यालय में संपन्न लर्निंग आउटकम परीक्षा का उद्देश्य क्या था ?

7.विद्यालय में आचार्य-अभिभावक गोष्ठी (P.T.M.) किस उद्देश्य से आयोजित की गई ?

8.शिशु भारती गठन का उद्देश्य क्या है ?

9.श्री गुरूजी का पूरा नाम क्या है ?

10.भारतीय संस्कृति में प्रकृति को क्या दर्जा दिया गया है ?

11.विश्व योग दिवस का उद्देश्य क्या है ?

12.बिरसा मुंडा द्वारा क्या उपदेश दिया गया ?

सूचना : पत्रिका के पृष्ठ क्रमांक 39 व 40 पर दिए गए प्रश्नों के उत्तर सभी भैया/बहिन दिनांक 10 जून 2024 तक अपने कक्षाचार्य जी के व्हाट्सएप पर भेजेंगे।